

॥ वक्रदसिपूजा ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

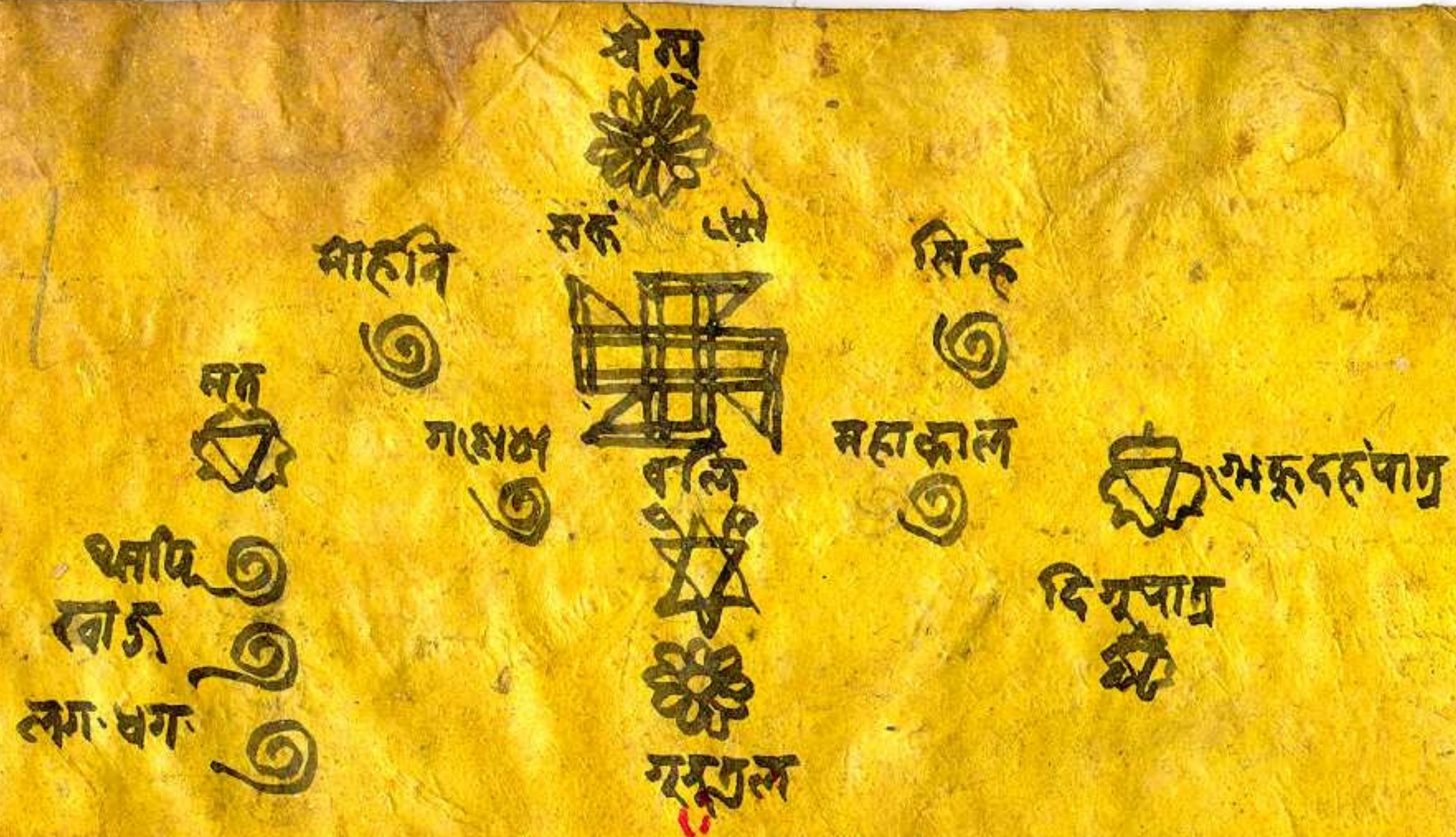
II-248

॥ वक्कदसि पूजा ॥

धर्मरत्न ब्रज्याचार्य सुरत श्री महाविहार

II-248

王 至 心 德 堂 藏 書 印



॥ १ ॥

ॐ नमः श्रीगुरुवक्षसखाया ॥ धनरूपां आपनायाय ॥ नीनाय ॥ ओं क्रीं अमृ
 गं की वं न स्वाहा ॥ ओं क्रीं स्वाहा ॥ ओं काय विष्णु धन स्वाहा ॥ प्राकृष्टं पुनीक स्वाहा ॥
 पूजा हलधिया ॥ वाक् ॥ ओं नमो गवर्ग पूष्य कुरु नाजाय तथ गता या हत संम्यक् संव
 हाय ॥ तथ ॥ ओं पूष्य पूष्य महा पूष्य पूष्य संव पूष्या हव पूष्य पूष्या वकीर्ण स्वाहा ॥
 स्वस्ति अथ काय ॥ धन स्वराव पूजा ॥ नृपां वं खलं खलं धनयाय ॥ ॐ वं वक्षो द
 क अमृतं वरुण स्वाहा ॥ पां दार्घ्या किलं खक्या डा नय ॥ ओं वं नृणां दिनवता ग

॥३॥॥२॥

सः पाशंप्रतीकस्वाहा ॥ स्नानवाय ॥ ॐ वनूद्यस्वाहा ॥ अनंताय स्वाहा ॥ वासु
कीनागनागाय स्वाहा ॥ गङ्गाय स्वाहा ॥ पद्माय स्वाहा ॥ महापद्माय स्वाहा ॥ धीरव
लाय स्वाहा ॥ कर्कतकाय स्वाहा ॥ कूलिकाय स्वाहा ॥ ॥ पंचापचानपूजा ॥ स्वांसिद्ध
रुद्रकाय ॥ ॥ स्नातु ॥ मकरस्थमहाभक्तं ध्वजातं ॥ ध्वजात्मकं ॥ धीवनूद्यं न
मस्यामि सफुल्लविह्वितं ॥ अनंतं वासुकिं चैव तद्रूपं प्रधीरवको ॥ महापद्मं
स्वपालैककर्कटकं कूलिकं तथा ॥ नृगदलाधिपादवानवनागनमाम्यहं ॥ ॥

॥३॥॥२॥

धनद्वयकनस ॥ ॐ कानचासं दवरवाचायक ॥ ॥ धनमेतुलधिल ॥ पातासंधि
ल ॥ ॐ सुवर्धचूर्धनरुद्रधनं प्रति क स्वाहा ॥ ॥ मूलमंगुजापयाय ॥ ॥ धन ॥
धनयाय ॥ ॐ स्वरावधुहासर्वधर्मा स्वरावधुहाहं ॥ ॥ पादार्घ्य ॥ धीचक्रसंव
नादिसकलदवगायः पाशंप्रतीकस्वाहा ॥ ॥ स्नानवाय ॥ ॐ धीवज्रहहनू
कद्रुद्राजकिनीमालसंवनस्वाहा ॥ ॐ ह्रीं हहद्रुद्रस्वाहा ॥ ॐ जाकिनीयद्रुद्र ॥
ॐ लाम्येद्रुद्र ॥ ॐ खैरुनाहद्रुद्र ॥ ॐ नृपिधीयद्रुद्र ॥ धीचक्रसंवनवज्रवा

नाक्षेत्रकपूष्यपरीक्षस्वाहा॥ ॥सिंहलंकि॥ ॥चंदनसिंदूरपूष्यपवित्रपाप
 नाशनं॥ आपदाहनननिसुलक्ष्मीनिसुगुस्वाहा॥ ॥रुंका॥ ॥दंतस्यनमवस्तं
 नानानंलग्नप॥ ॥हितं॥ ददामिपनमंवदुप्रतिगृह्यथसुखं॥ ॥स्नानकाय॥
 माननीमाधवीजातिरुत्पादिपूष्यमालिकानमः॥ ॥समयकाय॥ नेवशंषट्
 सेयूकंवाशंराशंसमन्वितं॥ नसनसाग्नपतंचददामिपनमैयदी॥ ॥लक्षिका
 य॥ रुंकापनमंदवदंकापंसिद्धिरुहनं॥ रुंकापंगुरुवत्सिद्धंरुंकापानमः

नमः॥ ॥मनविय॥ दीपायंहननध्वांतं सर्वगुणमिनायहं॥ घृतेलसमूहा
 लीमयादत्तं प्रतिगृह्यतां॥ ॥शुभ॥ यधर्माहनुप्रहृवाहनुगवांतथागतः॥
 कवदतवांथानिनाधनुवंवादीमहाशुभधः॥ ॥काकिंहाल॥ ॥थुलिस्वहाव
 पूजाशुभं॥ ॥धुंकन॥ ॥धीयन्नृष्यध्वनसमानाधनायवदधूपंनिमैगुयामि
 ॥ध्यान॥ स्वहावशुद्धासर्वधर्मास्वहावशुद्धाहं॥ ॥धीयन्नृष्यध्वनमात्मानेहाव
 यत्॥ ॥जाकिलंस्वगयापादार्घ्यतय॥ ॥अंयन्नृष्यध्वनपाशंपरीक्षस्वाहा॥ ॥

स्वीकृत्य ॥ ॐ पद्मनृपे ध्वनाय स्वाहा ॥ वीर्याय स्वाहा ॥ वंशाय स्वाहा ॥ मृदंगाय स्वाहा ॥ मृन्मूलाय स्वाहा ॥ ॐ वज्रहालाय स्वाहा ॥ हास्याय स्वाहा ॥ लास्याय स्वाहा ॥ सिद्धिनाटध्वनाय स्वाहा ॥ ॥ पंचापचानपूजा ॥ गाग्र ॥ पद्मनृपे ध्वनाहि इलाकध्वनं नमाम्यहं ॥ ॥ सुप्रलखिं मतविय ॥ यधर्मावान ॥ ॐ ॥ धनलिलगधगपूजा ॥ धूंकने ॥ ॐ वानूक्षिदवीरुहा न कसमानाधनाय व इधूपनिर्मगुयामि ॥ ॥ ध्यान ॥ स्वहा वज्रहा सर्वधर्मा स्वहा वज्रहा ॥ श्री



वानूक्षिदवीरावयग ॥ ॥ ला. हा. खं. वीरुहाय ॥ ॐ हहाही अखं स्वाहा ॥ ॥ त्रिकाक्षवाय ॥ ॐ आहू ॥ खडा दधूपनि नंकयाडा रुडाला हात सनसं थापि नसंगुमय ॥ ॐ अमृतं अमृतं प्रवक्ष्यामि ॥ ॥ पादार्घ्यतय ॥ श्री वानूक्षिदवी पादार्घ्यप्रतिष्ठ स्वाहा ॥ ॥ स्वीवाय ॥ ॐ वानूक्षिदवी स्वाहा ॥ अमृतनूपाय स्वाहा ॥ गकिन्ये स्वाहा ॥ ॥ पंचापचानपूजा ॥ हाग्र ॥ वानूक्षिचमहादवी सुंदरी अ निसुंदरि ॥ गुलाक्षमाहिनीदवी तस्ये दधेनमानमः ॥ ॐ ॥ धनता

लज्जहाय ॥ ॥ पीचाकूष्मविय ॥ गीत ॥ ॥ धनगून्मैकुलदन ॥ ॐ नमः श्री
 वज्रसत्वाय ॥ ॥ काकिडास्यंहातवितियाय ॥ ॥ गुनूवृद्धं गुनूधर्मं गुनूसैधं नथे
 वच ॥ ॥ गुमूवज्रधनसेव गुनूसर्वनिमाम्यहं ॥ तन ॥ ॥ लंखलानयाय ॥ ॐ वं व
 डादक अमृतं हवंतु दुःखाहा ॥ ॥ नाचाय ॥ ॐ ह्रीं अमृतं कीवंतु स्वाहा ॥ ॥
 स्नान ॥ ॐ यथा हि जातमागुं धः स्नापिता सर्वतथागता ॥ तथा हं स्नापयिष्यामि
 शुद्धं दिव्यं नवानिधम् ॥ ॐ आ सर्वतथागता हि धक समय शिर्य हं ॥ ॥

ह्राहायाय ॥ ॐ ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ क्रसहाय ॥ ॐ कायविष्णुधनस्वाहा ॥ ॥
 पूजारुलसहाय ॥ ॐ प्राकृष्णं प्रतीक स्वाहा ॥ ॥ पूजारथिया ॥ ॐ नमो
 गवर्तपूष्यकं गुनाजाय तथागतायार्हं सम्पत्तं वृद्धाय ॥ तथा ॥ ॐ पू
 ष्य २ महापूष्य स्रपूष्य पूष्य सैरुव पूष्या हव पूष्यां पूष्या वकी ॥ ॐ स्वाहा ॥
 मन वचन ॥ ॐ नीन शुद्धयाय ॥ ॐ आ ह्रीं । सु रु तु ग णिनः खडा हातं
 थिय ॥ ॥ ऊडी वाहा खडा वाहा स्नानमिने ॥ ॐ सर्वपापाधपनय ह्रीः ॥ २

आसनसमय॥ ॐ निष्ठुवडासनस्वाहा॥ ॥ भिनसस्वानतय॥ मधिधनीवडी
 निमहाप्रतिसननकु २ रूस्वाहा॥ ॥ सिनलंतिय॥ ॐ निलकविह्वल
 स्वाहा॥ ॥ मंगलधिल॥ ॐ वडासमरुसूलख २ सर्वतथागता अधिनिष्ठुगुस्वा
 हा॥ ॥ ऊगलाहातनंमंगलसकापूयाऽगतय॥ ॐ दानंरामयमं वृनाचसहि
 तं॥ भीलंचसनमार्जनं॥ ऊनिंकुद्रपिपीलिकापनयनं॥ वीर्यंक्रियास्थापनं॥
 ध्यानंनकुधमकचिरुवनधंप्रहासूलखाहला॥ ॥ गुणापानमिषगुवल

रुतकृत्वामूनमंगलं॥ तवगुवनकवर्ध॥ सर्वत्रागेर्विमूक॥ सूत्रमनूज
 विधिष्ठुचंद्रवदीफिकाकिधन॥ कनकसमृद्धो॥ जायतनाजवेरु॥ सुग
 तवनगृहस्मिन्कायकर्माधिकृत्वा॥ ॐ सूलख २ सर्वतथागता अधि
 निष्ठुगुस्वाहा॥ ॥ लाहातस॥ स्वानतस्यप्रयक॥ ॐ चन्द्रार्कविमलस्वाहा॥ ॥
 जाकि॥ लंखहाला॥ ॐ वडासत्वसर्वविद्यानूत्सानयहं॥ ॥ ध्यान॥ ॐ मंगुविधि
 तंरुमिमध्यंकावादीचगुवीजसंजानंमनहातुनं॥ वाय्वग्निजलावनि॥ मंगुपनि

सैकायधमनृगं तुलं नलसिंहसनस्थितं पप्रचंद्रं श्रीवदसत्वं दिहृऊक
 मुखं वद घंभधनं शिवसीचीवनधनिधीं विचिगाहनधीनीलवधा आत्मा
 लीकृ गंमोलिनं गूनुह दानकंधात्वा ॥ ॥ पादार्घ्यतय ॥ ॐ श्रीवदसत्त्वगू
 नूह दानकायपाशंप्रीकृत्वा ॥ ॥ मंजुलसजाकिहापूचावाय ॥ ॥
 ॐ ऊरुं वहा ॥ ॥ स्नानवाय ॥ ॥ हल २१ ॥ ॐ हूं मधमनवनमः ॥ ॐ हूं अ धम
 नवनमः ॥ ॐ हूं दुर्धमनवनमः ॥ ॐ यं पूर्वविदहायनमः ॥ ॐ नं ऊं वृद्धीपायन

मः ॥ ॐ तं अपनगादावनिशनमः ॥ ॐ वंडरुनकृ नूवनमः ॥ ॐ या उपदीपायनमः
 ॥ ॐ ना उपदीपायनमः ॥ ॐ ला उपदीपायनमः ॥ ॐ आ उपदीपायनमः ॥ ॐ यं गद
 नलायनमः ॥ ॐ वं स्त्री नलायनमः ॥ ॐ यां चक्र नलायायनमः ॥ ॐ ना खगू नला
 यनमः ॥ ॐ लां मधि नलायनमः ॥ ॐ व्या सर्वविधानेन नमः ॥ ॐ चंद्राय नमः ॥
 आ सूर्याय नमः ॥ ॥ पंचापचानपूजा ॥ ॥ स्नातृ ॥ ॐ आरूं श्रीमद्वदसत्त्व
 गूनुवनवनधकमलायसंम्यकृ हानावलासनकनायनमाहू नमस्तु

॥ ११८ ॥
 नमस्कृतु नमानमः ॥ हकृत्वा हं त्वानमस्यामि गुरुनाथ प्रसिद्धम ॥ यस्य प्रसाद
 किन ध्ये स्फुटिता त्वत्तत्त्व नत्न प्रहापनिक न प्रहतांधका ना पक्षं पुना विलह
 ठः सविलास मूर्च्छे तस्मे नमस्कृतिनियं गुरुत्वा कृताय ॥ नमावूहाय गुरुव
 नमाधर्माय ॥ गानिन नमः संधाय महतः प्रियापि सततं नमः ॥ सर्ववृद्धे न
 मस्यामि धर्मचक्रिन रुषितं ॥ संधं च धील संपन्नं नत्न प्रयं नमाम्यहं ॥
 नत्न प्रय मध न धं सर्वप्रतिदिक्षाम्यहं ॥ अनुमाद ऊगत्पृथ्वं वृद्धवा धेद

॥ ११९ ॥
 धमनः ॥ आवाधो धन धीयामि वृद्धं धर्मं गच्छामां ॥ वाधो चिह्नं कृत्वा वत्स
 पथार्थ प्रसिद्धय ॥ उसादयामि पत्रमां वन वाधिप्रचानिकां ॥ वृद्धा हवयं ऊ
 गता हिताय कनूष्ठा वक्षत ॥ दधनां सवया पानां पूष्ठा नां चानूमादनी ॥
 कृतापवा संचनीष्यामि आर्यं शांग मूपावधं ॥ ॥ जा किलं स्वकया उनि
 र्या कृतायाय ॥ ॐ अस्मद्गं मयम नूचतु दीपापक्षानि ॥ सफ नत्न समाकी
 र्क्षं ददनुकून दायिनी ॥ गुरुत्वा वृद्ध धर्मस्य संधस्य च तथे वच ॥ निर्यातया

मिहावेन संपूर्णः तलमंजुलं ॥ ॥ पापदंशना ॥ मया बालनमूरुनयत्
 किं चित्पापमाचितं ॥ प्रकृष्टावयसावयप्रहृष्टावयमवच ॥ तत्सर्वदंश
 यामधनाथानामग्रतः स्थितः ॥ कृतांजलिर्दखलीतः प्रक्षिपत्पूनः पूनः ॥ अ
 लयमस्ययत्नप्रतिगृह्णुनायका ॥ नतद्रुमिदं नाथानकर्तव्यं पूनर्म
 या ॥ यथागतथागता अहंकः संम्यक् संवृद्धा ह्यननचक्रुषा ज्ञानकित
 कृष्णलं निष्पन्नानुत्तनाया संम्यक् संवा ॥ ॥ तथा हंक निष्पामितस्य नि

हामयामि ॥ ॥ यथा ममानन समानकालं लाकृष्टदुःखं च सूरवा दयं
 च ॥ हर्तुं च कर्तुं च समस्तुष्णकिस्मः प्रकाशं च यथेव हानू ॥ एव कवा
 यागमूपागता वा सर्वप्रकाशं गता हि निष्कृष्यामस्तु सर्वसंहिता ॥ दृ
 ष्टः प्रकानुस्मृतिमागता वा ॥ ॥ धनद्रुपमाला ॥ धनः ज्ञापयाय ॥ ॥
 यधर्मावान ॥ ॥ वलिविय ॥ लंरुचकुलूतय ॥ ॐ अकानामूरुः सर्वध
 षां मायं नृपन्तवात् ॐ आहूयस्वाहा ॥ ॥ स्नानवायः काल १४ ॐ ॐ

॥ १८ ॥

आय स्वाहा ॥ यमाय स्वाहा ॥ वनूधाय स्वाहा ॥ कुबेराय स्वाहा ॥ अग्नये स्वाहा ॥ नैऋत्य
 याय स्वाहा ॥ वायवे स्वाहा ॥ ईशानाय स्वाहा ॥ बुधाय स्वाहा ॥ विश्वे स्वाहा ॥ ॐ चंद्रा
 याय स्वाहा ॥ सूर्याय स्वाहा ॥ अश्विन्य स्वाहा ॥ नारायणाय स्वाहा ॥ ॥ पंचायनाम पूजा
 ॥ का तु ॥ ॐ द्वादशमहावीनालाकपालामहर्द्विका ॥ दशदिक्स्थितावीनालाकपा
 लीनमामहं ॥ ॥ वलिसलंखहायक ॥ ॐ न्द्रुवडी सहदवसंधेनिमंच गृहं तु वलिं
 विधिदं ॥ अग्निर्यमो नैऋतिरूपनिष्ठा अणं पतिर्वायू धनाधिप इन्द्रोऽनरुता

॥ १९ ॥

धिपतिश्च दवा ॥ ॐ च चंद्रा कीर्तिता महर्द्विका दवा समस्ता हविष च नागा धना धना
 गृह गणेश समता प्रतिपतिस्त्वकनिवेदय नुस्वकस्वकास्वेव दिष्ठा सूरता गृहं तु ह
 ऊं तु पिवं तु यदं ॐ दं च कर्म सरुलं रुषं तु स्वाहा ॥ ॥ जाकि शास्यं ॥ ॐ ता कुनवान मं तु
 लविसर्जनं याय ॥ ॐ वद्रा सत्त्व समय मनू पालय वद्रा सत्त्व स्वना पतिवृष्टामहव सु
 पाषाणमहव सूरताणामहव अनूचका महव सर्वसिद्धिं मप्रयक्तु सर्वकर्मसूचममि
 न्द्रुय कुनू हं हं हं हं हा हं गव न् सर्वतथा गत वद्रा माम मूंच व द्री हव महासम

यसत्त्वभाः॥ ॥जाकिलस्वकास्पविसर्जनयाय॥ॐकुत्सेवंसर्वसत्त्वार्थसिद्धिदत्ता
यथानूगा॥ गच्छध्वं वृद्धविषयपूनागमनायन॥ॐआइ इंआॐ गच्छवृद्धमं
लविसर्जनम्॥ ॥स्नाननमनमनंकुय॥मंगुलशय॥ ॥हूतिगुन्मंगुलसंपूर्ण॥
शुभं॥ ॥धनकायहस्तपूजा॥ धुंकन॥ॐवीवङ्गयागिनीआनाधनायवधूपनिमग्न
यानि॥ ॥पादार्घ्यतय॥ॐवङ्गयागिनीहृदायपाशंपुत्रीकुत्साहा॥ ॥स्नानवाय॥
ॐवंवङ्गवाहीयस्वाहा॥ हांयायामिनीयस्वाहा॥ ह्रींमामाहिनीयस्वाहा॥ ह्रींह्रींसंचा

त्रिधीयस्वाहा॥इंइंसंज्ञासनीयस्वाहा॥रुद्रचण्डिकायस्वाहा॥ ॥पंचापचायपूजा
॥ ॥स्नातु॥धूनताकनूधस्तानंघुंधुंकनमस्कृतं॥हस्तकल्पग्नित्वरुजनम
कुवङ्गयागिनी॥ ॥धनमाहनीपूजा॥ ॥मूलमंगुजापधूप॥ ॥पादार्घ्य॥पं
चमाहिभ्योपाशंपुत्रीकुत्साहा॥ ॥वानवाय॥ॐइंरुनीयस्वाहा॥रुंरुनीयस्वाहा॥
माहिनीयस्वाहा॥आकर्षणीयस्वाहा॥वलीकनधीयस्वाहा॥ ॥पंचापन॥ॐ
रुनीरुनीरुनीचेवमाहिनीयस्वाहा॥वलीकनधीयस्वाहा॥दांदवीनमामिपंचमाहिनी॥

थन ६६ तादापूच्यास्यं माह निरुय दवयातथियक ॥ ॥ थन काय ह ऊऊ मायातल
 शाह्य ॥ दवतायाततन ॥ उयातातलचकुतानि न धूताविशुक्तताहासना दग्धनि
 शितयात्रिदायमहितापीयूषधनालूता वृद्धहाननसामृताविकलूषासांनंदसंदाह
 दा हावाहाव विचानध विनहितावानाहिकापातुव ॥ ॥ मंगुलसतिचकथमन
 नित्य ॥ ॥ थन ऊऊ मानमंगुलदनक धनामंगुलथिय ॥ जाकि हापूचा वाय ॥
 २१ हातवाय ॥ ॥ चंदननमः पूष्यनमः ॥ जाकिलं रवकयाशहायक ॥ गीतअनील ॥

स्वां जाकि धूं जानाश वाकयाय ॥ ॥ लाहाथवितिया नाचान ॥ ॥ कर्तुमिच्छाम्य
 हं नाथमंगुलं कनू धात्मकं ॥ शिष्यानाम नूकं पाययूष्याकं पूजनाय च ॥ नमः हं
 हावन्प्रधादं कर्तुमर्हथ ॥ दवयाततन ॥ ॥ जाकि कयाशा हाथ हातलपा ॥ ॥
 ॐ नमः श्रीचक्रसंस्त्राय ॥ वेदतवाधिसंमत्तसंतानधकृताय नमः ॥ सतगुरुं यत्
 प्रसादनममास्तन संरुवः ॥ श्रीमन्वडुगाकाय जाकि नीचक्रवर्द्धिन ॥ पंचहान
 त्रिकायाय गाथाय उगतानमः ॥ नमः ॥ ॥ ध्यानयाय ॥ ॐ स्वहावशुद्धावात

II-248 धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

॥ वलितविय लंखनय ॥ ॐ आ हूं ॥ मंगुलखिल ॥ ॐ चक्रहम हूं सुखवि २ सर्वतथा ॥
गता अधिनिष्ठुं सुखाहा ॥ ॥ दिगुपाय सिंदूरनन निहासनाय ॥ गृगृपुपथना ॥
ला हा खनय ॥ लखितय ॥ ॐ हहा हीं अखं स्वाहा ॥ ॥ धनयाय ॥ ॐ आ हूं ॥ अ
मृतं अमृतं प्रवसय हूं ॥ ॥ धूकन ॥ ॐ वानुधी दधेव कधूपनमः ॥ पायसपा
दाघनय ॥ ॐ वानुधी दधेपाशंप्रतीक स्वाहा ॥ ॥ स्वानवीय ॥ ॐ आनंद स्वा
हा ॥ पद्मानंद स्वाहा ॥ विनमानंद स्वाहा ॥ सहजानंद स्वाहा ॥ हृदयानंद स्वाहा ॥

पंचापपूजा ॥ ॥ स्फुट ॥ नीलनीलीकनीलाहा अकालः संगसंगिनी ॥ एकली
हंत्वां महावाक् अकालाहवमामकी ॥ मंगुलसपादाघनय ॥ श्रीचक्रसंवनत
हानकायपाशंप्रतीक स्वाहा ॥ स्वांवाय ॥ श्रीहनुकाय स्वाहा ॥ ॐ चक्रसंवनाय स्वा
हा ॥ ॐ गुकिमे हूं रुद्र ॥ ॐ नाम्ने हूं रुद्र ॥ ॐ खैरुनाहाय हूं रुद्र ॥ ॐ त्रुपि हूं रुद्र ॥
ॐ काका ॥ स्वाहा ॥ उलूकास्यादि ॥ दक्षदिगलाकपालस्य हूं रुद्र ॥ ॐ चंगागु
आदि अष्टाशानस्य स्वाहा ॥ ॥ पंचापचानपूजा ॥ ॥ गृगृ ॥ सर्वहृदयानसंदा

२६
हं इगदर्थपुष्पधकं॥ चिंतामणिमिवाहूतं श्रीसंभवेन नमाम्यहं॥ ॥ दिगूपा
गुकास्यं तर्पय विषयं॥ अं नमो गगनवती नवीनव्यवसाये इहं॥ इका नंपन
मंदवं इका नानमानमः॥ ॥ खड्गालाहमसुपंचकाधवाय॥ स्वानवाय॥ ॥
अं वंचकवाहीय स्वाहा॥ हीयायामिमे स्वाहा॥ ह्रीं मां माहिनीय स्वाहा॥ ह्रीं ह्रीं संचावि
धीय स्वाहा॥ ह्रीं ह्रीं संगमिने इहं॥ इहं २ चंठिकाये इहं॥ ॥ पंचापचात्रपूजा
स्तुति॥ नमामि वंचकवाहाहिया मिनीमाहिनी नमः॥ संचाविधी गामिनी चंच

२७
ठिका चंडविदुमा॥ ॥ मंगुलसताम॥ ॥ तर्पय॥ इका नंपन मंदवं इका न
सिद्धिराहूतं॥ इका नंगुहवतुष्यं हाका नायनमानमः॥ ॥ थनठिनसपादा
र्यमय॥ अं पंचवृद्धा पाशीपुत्री कृत्वाहा॥ ॥ स्वानवाय॥ वेनाचनाय स्वाहा॥
अं कात्याय स्वाहा॥ नक्षत्रं वाय स्वाहा॥ अमिताहाय स्वाहा॥ अमाद्यसिद्धाय स्वा
हा॥ ॥ पंचापचात्रपूजा॥ ॥ स्तुति॥ नमामि पंचवृद्धां कृत्वा नंगुका
मध्यवेनाचनं नार्थं पंचवृद्धं नमाम्यहं॥ ॥ थनकापयाय॥ यधमावि न॥ ॥

गलधम महाकालपूजा ॥ ॥ पादार्घ्य ॥ ॐ श्रीगलधम महाकालनंदिकृष्ण-वे
 शुवधरुहात्रिकल्पः पाद्यप्रतिकृत्वाहा ॥ ॥ स्वांवाय ॥ ॐ गंगधपतयं स्वाहा ॥
 गलधपतयं स्वाहा ॥ गलधपतिपूजिताय स्वाहा ॥ ॥ महाकालाया नमः ॥ ममहा
 कालाय स्वाहा ॥ महाकालाय स्वाहा ॥ वनालाय स्वाहा ॥ ॥ सुगंयाहा ॥ ॐ आयुर्वृ
 थ स्वाहा ॥ यथैव वृद्धय स्वाहा ॥ प्रह्ला वृद्धय स्वाहा ॥ सैतान वृद्धय स्वाहा ॥ धनवृद्ध
 य स्वाहा ॥ सुखवृद्धय स्वाहा ॥ आराग्यवृद्धय स्वाहा ॥ ॥ मरुयात ॥ वैष्णवना

य स्वाहा ॥ माहिहृदाय स्वाहा ॥ पूर्णहृदाय स्वाहा ॥ धनदाय स्वाहा ॥ वैष्णवधाम
 स्वाहा ॥ ॥ सकलकार्त्त ॥ पंचापचानपूजा ॥ ह्लागु ॥ गलधधम महाकालनंदि
 कृष्णनसंस्कृतं ॥ वैष्णवनलाधिपदवंप्रधमामिदिभदिन ॥ ॥ थनसिंहनथ
 पनेस-धुंकने ॥ ॐ वरुयागिनीदेवीसमानाधनाय वरुधूपेनीर्षगुयामि ॥
 पादार्घ्य ॥ वरुयागिनीपाद्यप्रतिकृत्वाहा ॥ ॥ स्वांवाय ॥ ॐ वरुयागिनादिषट्पदा
 गिनीहः वरुपूष्यनमः ॥ ॥ पंचापचानपूजा ॥ ॥ ह्लागु ॥ नमामि वरुवाकाहि

३०
यामिनी माहिनी तथा ॥ संवात्रिंशी गुप्तिनी च चण्डिका च वृद्धिका ॥ ॥ थनं लि
थपि पूजा ॥ ॥ नकुवर्ध ॥ ॥ धूंकन ॥ ॐ वानुधी देवी समाना धनाय वद
धूपे नमः ॥ मंगुपादुयाग एतिय ॥ खंडला तय ॥ ॐ हहा ह्रीं अस्व स्वाहा ॥
ध्यान ॥ स्वहा व शुद्धा सर्वधर्मा स्वहा व शुद्धा है ॥ ॥ पादार्घ्य ॥ श्री वानुधी देवी
पाद्यं नमः ॥ ॥ स्वांवाय ॥ वानुधी देव्ये स्वाहा ॥ ॐ अमृतं ह्रीं स्वाहा ॥ ॥ धनवर्ध
य स्वाहा ॥ नीलवर्धय स्वाहा ॥ पीतवर्धय स्वाहा ॥ नकुवर्धय स्वाहा ॥ ॥ ध

३१
मवर्धय स्वाहा ॥ ॥ पंचापचानपूजा ॥ ॥ कृष्ण ॥ वानुधी च महा देवी सुंद
री अति सुंदरी ॥ गुलाक्क माहिनी देवी तस्मै दध्ने नमानमः ॥ सक्षललिं मरु
विय ॥ यधर्मा धान ॥ ॥ थनं लि मंगुपादुस नकुर्वदनं दिका धवाया ॐ आ
ह्रीं ॥ धूपन ॥ लखितय ॥ खंडला तय ॥ ॥ धनयाय ॥ ॐ कृष्ण मूडा दिका
धवाय ॥ ॐ आह्रीं ॥ ॐ हहा ह्रीं अस्व स्वाहा ॥ अमृत अमृतं प्रवक्ष्ये ॥ ॥
ध्यान ॥ ॐ हका ना हननवर्ध हा काना र्ग धना धन ॥ ह्रीं काना वीर्य हंता च अम

३२
 ताका नंगुहावयन् ॥ ॥ पादार्घ्य ॥ ॐ वङ्क नाटक दवता हृदय काय पायंप्रती
 कृत्वा हा ॥ ॥ स्वावाय ॥ ॐ आर्द्रं कृत्वा हा ॥ ॐ वङ्क काभाटकाय स्वाहा ॥ सम
 यक नाटकाय स्वाहा ॥ विसमयक नाटकाय स्वाहा ॥ समय वि समयक नाटका
 य स्वाहा ॥ ॥ पञ्चापचात्र पूजा ॥ ॥ नाग ॥ ॐ नमो नाक नूतनानां गुणानु कनम
 स्तुते ॥ हल लक्ष्मिगिरिवरुणा नमस्तु वङ्क यागिणी ॥ ॥ धार संतुत्या सप्त ॥ ॥
 मन्त्रविय ॥ यधर्मा धानि ॥ ॥ धनमूल पूजा ॥ गृगृथने ॥ ॥ मूलमं गृनं ज्ञापया

३३
 य ॥ ॥ धुंकन ॥ ॐ चक्र संवत् वङ्क वागादि सकल गङ्गा दवता नाधनाय वङ्क धूपं निमं
 नुयामि ॥ ॥ गीतनमाद्री ॥ दवता दकायामं धालमैरुल पाता संचाय ॥ ॥ ॐ वङ्क
 ह्रमद्रै सुलेख २ सर्वतथा गता अधितिष्ठं तु स्वाहा ॥ ॥ पातास ॥ ॐ सुवर्धं चूर्ध
 नङ्क धाने प्रतिकृत्वा हा ॥ ॥ धान ॥ स्वहा वङ्क वागान ॥ पादार्घ्य ॥ ॐ चक्र
 संवत् वागादि पाशंप्रतिकृत्वा हा ॥ ॥ स्वानवाय ॥ ॐ चक्र संवत् वाय स्वाहा ॥ हा
 दवा हजाय स्वाहा ॥ चतुर्वक्त्राय स्वाहा ॥ जाली संचनाय स्वाहा ॥ ॐ शुक्ति

स्वे स्वाहा ॥ लामाय स्वाहा ॥ खंड्या हाय स्वाहा ॥ नृपिण्डे स्वाहा ॥ अंबुजवा ना हाय
 स्वाहा ॥ अंबुजयागि म्ये स्वाहा ॥ नरुवर्धय स्वाहा ॥ ॥ पंचापचात्र पूजा ॥
 स्तुतु ॥ सर्वज्ञानसंदाहृजगदर्थप्रसाधकं ॥ चिंतामणिमिवाहूतं श्रीसैवयेन
 माम्यहं ॥ ✕ ॥ मंरु श्रीपूजा ॥ धूंफन ॥ श्रीमंरु श्रीरुद्रात्रकायचक्रधूपनिर्मग
 यामि ॥ ॥ ध्यान ॥ अं स्वरावगुहा सर्वधर्मास्वरावगुहाई ॥ ॥ पादार्घ्य ॥
 श्रीमंरु श्रीरुद्रात्रकायपाद्यप्रतिक्रिस्वाहा ॥ ॥ स्वांवाय ॥ श्रीमंरु श्रीपंस्वा

३५

हा ॥ हानगाय स्वाहा ॥ खड्गपूरुकाय स्वाहा ॥ अत्रवाधधनाय स्वाहा ॥ वागीध्वना
 य स्वाहा ॥ अंबुजकीकूटः खड्गदप्रहा हानमूर्ध्नि हानकायवागीध्वनअत्रपंच
 नायननमः स्वाहा ॥ ॥ पंचापचात्र पूजा ॥ ॥ श्राद्ध ॥ मंरु धार्घ्य महावीरस
 र्वरुहानदायनी ॥ सर्वसिद्धिं ध्वनेनार्थः मंरु धार्घ्येन माम्यहं ॥ ॥ सक्क ॥
 कायमनविय ॥ ॥ यधामाधान ॥ ॥ धनधमधुपूजा ॥ धूंफ ॥ धामे
 गुपातासंचाय ॥ ॥ पादार्घ्य ॥ वागीध्वनरुद्रात्रकायपाद्यप्रतिक्रिस्वाहा ॥ ॥

स्वांवाय॥ धर्मधनुर्वस्वाहा॥ वागीध्वनायस्वाहा॥ ओं मूस्वाहा॥ ॥ पंचापचा
 नपूजा॥ ॥ ह्नागु यधमविन॥ ॥ थनमामाप्रिंदवतापूजा॥ ॥ थनलाचा
 कपूजा॥ ॥ थनदगुवलिसलंखकगुलूतय॥ ओं आहू॥ अकानामूखस
 र्वधर्माधामाशंनृत्यन्तस्वाहा॥ ओं आहू॥ रुद्रस्वाहा॥ ॥ स्वांवाय॥ ओं रुद्राय
 स्वाहा॥ यमायस्वाहा॥ वरूधायस्वाहा॥ कुर्वनायस्वाहा॥ अरुनयस्वाहा॥ नैम
 त्पायस्वाहा॥ वायूवस्वाहा॥ ॥ ॐ नानायस्वाहा॥ बुधनेस्वाहा॥ चंशयस्वाहा॥

सूर्यायस्वाहा॥ पृथिव्येस्वाहा॥ नागत्यःस्वाहा॥ भूसूत्रयःस्वाहा॥ सर्वदिगवि
 दिग्लोकपालस्यस्वाहा॥ ॥ पंचापचानपूजा॥ ॥ ह्नागु॥ रुद्रादया
 महानागालोकपालामहर्द्रिका॥ दधदिकुस्थितांवीनालोकपालेनमाम्यहे॥
 ॥ वलिसलंखहायक॥ ओं खखखाहिराहिसर्वयकुनाकुस॥ हूतप्रतपि
 ॥ चउन्माद अपस्मान गक गाकिन्यादय ॐ ॐ देवलिंगं हुं गु समयं न
 ॐ गु॥ समसिद्धिमप्रयच्छे गुयथेवयथ ॐ ॐ ॐ पिवथ॥ मातृक्रमथ

ममसर्वसत्त्वानां च सत्सखवृद्धयसहायका हवंगुह २ रुद्र २ स्वाहा ॥
 थनऊऊमानयातगुनर्मगुलुनक ॥ धनमेतु पातासैवाय ॥ ॥ जाकिदापू
 यो वाय ॥ स्वी २१ ह्यलवाय ॥ सिन्हुहिक ॥ स्वाकाय सङ्ग मतविय ॥ ॥
 जाकिलैव निर्यातनयाय ॥ अष्टभृंगं मयै मनुचगुर्दीपाय ॥ ॥ हिनं सफनल
 समाकीर्णददनुकनदायिनी गुनूखा वृद्धधर्मस्य संघस्य कथेवचनिर्यातया
 मितावनसैयूर्धनन्नमेगुले ॥ ॥ पीयापचानपूजा ॥ यधर्माधान ॥ ॥ थन
 सकस्यनंदवज्रप किमकाय ॥ ॥ किमवदतिन ॥ ॥ वाक्कयाय ॥ ॥

ॐ आहुं श्रीमत्त्वज्रसत्त्वसगुनूचनधकमलाय सम्यक्ज्ञानावहासन
 कगायनमाहुं ॥ नमस्तु २ नमस्तु नमानमः ॥ हकस्याहंत्वां नमस्यामिगुनू
 नाथपुसिद्धम ॥ १ ॥ गत्सयात ॥ गद्यतिचहन्वविद्यमाहुं विनायक ॥
 सर्वविद्यहर्नदवंगद्यधिपं नमाम्यहं ॥ २ ॥ महाकालयात ॥ कुल्लवर्ध
 मानूढं वृद्धसासनवहुक ॥ कर्तुं कपालधनं नाथं महाकालं नमाम्यहं ॥ ३
 ॥ सगंयात ॥ आयुर्वृद्धि ॥ वृद्धि वृद्धि प्रहासखरुथ ॥ आनागधधनसैता

नंसफवृद्धिनमाम्यहं॥ ४ ॥ आधियात॥ नीलनीलांकनितारा अऊएसे
 गसेगिनीरुक्ताहंत्वामहावाक् भूक्याहवमामकी॥ ५ ॥ स्वाक्यात॥ आ
 नंदंपनमानंदं वीनमानंदसंहर्ष॥ सहजानंदतामानी पीचानंदनमाम्यहं॥
 मलयान॥ त्रुंजसंवीरुनिर्यातं वेणुवर्धमं हर्ष॥ वेणुनलमहर्विदः सर्वसंप
 दिदायकं॥ ७ ॥ माहनीयान॥ ऊहनाहूहनीचेवमाहितां कर्षधनथा॥ वशी
 कत्रुधकंचेवदहंपंचमाहिनी॥ ८ ॥ सिंहयात॥ कन्यगाकनूष्मात्मानं

२९

गुं धागुकनभास्करं॥ कलत्कल्यानिवर्द्धनमस्तुवज्रयागिनी॥ ९ ॥
 सैवयान॥ सर्वहृद्धानसंदाहजगदर्थपुसाधकं॥ चिंतानिमिवाहृतं श्री
 सैवरीनमाम्यहं॥ १० ॥ रगवानयान॥ सर्वद्विपूषुनीकां त्रैसर्वहंकनूष्मा
 स्यदे॥ समैतत्तदंशास्त्रानंसावसिंहंनमाम्यहं॥ ११ ॥ मरुणीयात॥ अं व
 द्वातीकुइः खकदप्रहाहानमूर्ध्व॥ हानकायवागीध्वनअनपचनायतन
 मः॥ १२ ॥ चंद्रमहानावधयात॥ कृष्णवर्धमहावीनंरुद्रपांकरतर्जनं॥ स

२
वद्वनिकुंतं अचलवीजं नमाम्यहं ॥ १३ ॥ दण्डाध्यात ॥ नमस्कृत्वा धनका
नं सर्वमाननिसूदनं ॥ गेला अविद्यादीनां दण्डाध्यात नमाम्यहं ॥ १४ ॥ स
कसकगुणाय ॥ बुद्धादयामहावीनालाकपालामहदिका ॥ दण्डादिक
स्थितावीनालाकपालां नमाम्यहं ॥ १५ ॥ धनहाथविमलियाया ॥ ॥ दान
पत ॥ अक्षानसललितापुत्रमहानगय - - - - - अमकनामध्वयस्य
सघरिवाराणां अष्टमाहास्यहनार्थं सफुवृद्धि अष्टे षष्ठ्यर्थापि कामून

४३
या श्रीचक्रसैवनवज्ञानाद्यादिसकलदेवतागणानकस्यायसिंदुनाचन
पंचापचाग्रपूजासंपूर्णार्थं अगुगैधपूषं धूपदीपनेवेशादि तत्सर्वविधि
पनिपूर्णा मस्तु ॥ ॥ आसिर्वादविय ॥ ॥ धनविसर्जनयाय मंगुलेश
य ॥ ॥ धनग्रपूजा ॥ दक्षिण ॥ पंचाकूट ॥ सगं ॥ ओ ॥ सिंह ॥ माह
नी विसर्जनयाय ॥ सगं गोय ॥ सिंह तन ॥ तिय ॥ एव विसर्जन ॥
पाशुका काय ॥ विय ॥ ॥ गीत हूं हूं हूं ॥ समपचक्र ॥ गीत नयाम्य ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

शुभाशुभसंभव १०४३ साल शुक्रशुक्रदि ४ मास २ सहित धनुर्वर्ध महा
विहान २ ॐ कलिनद्रवर्धविहानसंवातनपुपंति

तथीविप्रमानेदनंथपुनरुदिनसंवायावियाहल ॐ ॥ ॐ

संवातनपुपंति १

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥